आभार

अनुभूतियों के इस संवाद में सभी संवेदनाओं की शब्दशः अभिव्यक्ति देना संभव नहीं है किन्तु इस क्षण का उज्ज्वल आनन्द मुझसे उन सभी स्मृतियों को संजो लेने का आग्रह कर रहा है जो इस शोध कार्य में प्रतिपल अलग–अलग रूप में मेरे विश्वास की डोर को अपने प्रेरणादायक सहयोग से थामें रही है।

सर्वप्रथम मैं माँ शारदा के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ, जिन्होंने निष्ठा के साथ मुझे कार्य करने की शक्ति प्रदान की हैं।

शोध निर्देशिका के रूप में डॉ. चेतना बनावत जी के सूक्ष्म अवलोकन तथा कार्य करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करने की प्रवृत्ति के कारण ही यह शोध प्रबन्ध साकार रूप ले पाया है, शोधकार्य को करते समय जब कभी भी किसी भी प्रकार की निराशा मुझे घेरती वे सदैव मेरा ध्यान मेरे विषय पर केन्द्रित करते हुए सरल व सहज होने के लिए प्रेरित करती, उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य संभव नहीं होता। मैं पूर्ण श्रद्धा के साथ उनका आभार व्यक्त करती हूँ।

मुझे अध्ययनशील बनाने व मेरी क्षमताओं में विश्वास दिलाकर मुझे सदैव हर परिस्थिति में समर्थन व प्रोत्साहन के लिए मैं अपने दादा गुरू स्व. श्री मोहन लाल जी व दादी माँ स्व. श्रीमती सुन्दर देवी एवं मेरे माता–पिता स्व. श्री रमेश चन्द्र व श्रीमती मधु देवी को सादर श्रद्धामय वन्दन करती हूँ।

वनस्थली विद्यापीठ की सह कुलपति एवं संगीत विभागाध्यक्ष प्रो. ईना शास्त्री जी व संगीत विभाग सुर मन्दिर परिवार के प्रत्येक गुरूजनों के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, साथ ही मेरी गुरू माँ श्रीमती बीना साह जी एवं मेरे गुरू (भूतपूर्व प्रोफेसर संगीत विभाग, वनस्थली) डॉ. गोपाल कृष्ण साह जी का भी मैं सत्–सत् वंदन करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरे इस कार्य को लेकर मेरे प्रेरणा स्त्रोत बने हैं। उन सभी के प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगी।

अपने इस शोध आभार में मैंने जिन विद्वानों के अनेकानेक ग्रंथो से प्रत्यक्ष व परोक्ष ज्ञान एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया है, उनके प्रति में हृदय से आभारी हूँ यह शोध कार्य विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा संगीत संस्थाओं के समस्त संगीत विद्ों द्वारा साक्षात्कार के दौरान विषय–वस्तु के संदर्भ में अभिव्यक्त प्रखर तथा मुखर विचारों से अवश्य ही लाभान्वित हो पाया है इस हेतु सभी संगीत कला पारखी जनों का सादर धन्यवाद करती हूँ

पुस्तकालय वनस्थली विद्यापीठ, 'संगीत विभाग' दिल्ली विश्वविद्यालय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालय नैनीताल, N.M.WADIA LIBRARY OF MUSIC (N.C.P.A) MUMBAI इन सभी के सहयोगियों के सदैव उपलब्ध सहयोग के लिए मैं इन सबका आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही टंकण कार्य के लिए टंकणकर्ता का भी मैं धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने समय–समय पर मेरे कार्य को पूर्ण कराया।

अन्ततः मै अपने शोध कार्य सम्पादन के इस अवसर पर मेरे प्रेरणा स्त्रोत मेरे अग्रज श्री रोहित कुमार व मेरे अनुज श्री मनीष कुमार एवं सभी परिवारजन व अन्य सहयोगिगण, मित्रगणों के प्रति मैं सदैव अभारी रहूँगी।

कु. ऋतु रानी